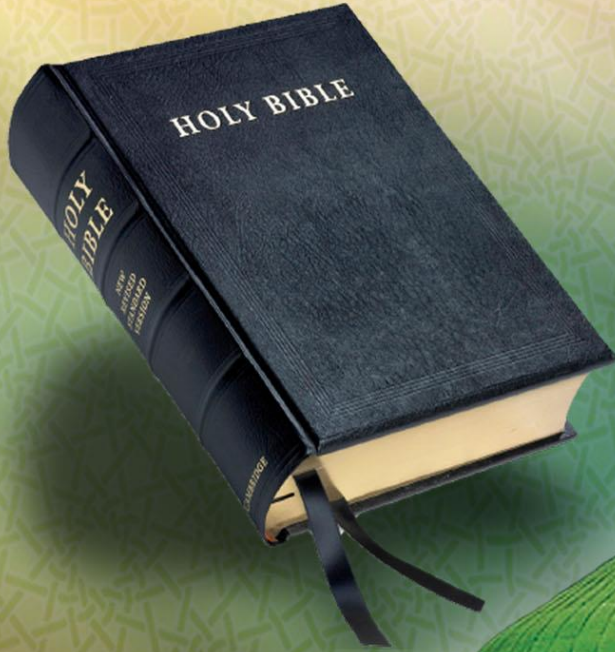


# Muhammad and the Bible

Allama William GoldSack

## हज़रत मुहम्मद और बाईबल मुक़द्दस

अल्लामा विलियम गोल्डसेक साहब



[www.study-islam.org](http://www.study-islam.org)



# Rev William Goldsack

Australian Baptist Missionary and Apologist

1871–1957

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

## Muhammad and the Bible

BY

Rev. W. Gold sack

1871-1957

## हज़रत मुहम्मद और किताब-ए-मकुदस

यानी

इस दावे की तहकीक कि तौरत शरीफ़ और इंजील शरीफ़ में आँहज़रत के

मुताल्लिक पेशनगोईयाँ पाई जाती हैं

---

मुसन्निफ़

अल्लामा डब्ल्यू-गोल्ड सेक साहिब

1955

---

पंजाब रिलिजस बुक सोसाईटी

अनारकली - लाहौर

1955 इसवी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

## हज़रत मुहम्मद और किताब-ए-मुक़दस

बहुत से मुसलमानों का अक़ीदा है कि उनके पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद साहिब के हक़ में तौरैत शरीफ़ और इंजील शरीफ़ में पेशनगोइयाँ मौजूद हैं और बाअज़ मुसलमान मुसन्निफ़ीन ने चंद हवाले भी किताब मुक़दस से पेश किए हैं जिनकी बिना पर यह दाअवा किया जाता है कि उनमें पैग़ंबर अरब की बाबत पेशनगोइयाँ पाई जाती है। मुहम्मद साहिब की बाबत पेशनगोइयाँ किताब मुक़दस में तलाश करना ख़ाली अज़-इल्लत नहीं है क्योंकि अगर मुसलमानों के ख़याल के मुताबिक़ हज़रत मुहम्मद साहिब वाक़ई आखिरी और सबसे बड़े नबी हैं तो जिस तरह सय्यदना मसीह की बाबत यहूदीयों के सहीफ़ों में पेशनगोइयाँ मुन्दरज हैं इसी तरह ज़रूर सहाइफ़ अम्बिया में हज़रत मुहम्मद साहिब अपने आप को उम्मी नबी से मुलक्कब करना पसंद करते थे और अगरचे इस लफ़्ज़ के सही मअनी पर अब तक लोगों में इखतिलाफ़ है तो भी इस बात में शक की कोई गुंजाइश नहीं कि आपने खुद भी मूसवी और मसीही सहीफ़ों को नहीं पढ़ा था लेकिन साथ ही यहूदीयों और मसीहीयों में से ऐसे नोमुसलमानों की कोई कमी नहीं थी जिन्होंने हज़रत मुहम्मद साहिब को यह यक़ीन दिला दिया कि आप नबी थे और आपकी आमद की पेशनगोई किताब मुक़दस में निहायत वाज़ेह तौर से पाई जाती थी। यहूदीयों के अपने मसीह की इंतज़ारी के बयानात और मसीहीयों के मसीह की दूसरी आमद के ख़यालात मिला कर उन लोगों ने एक आने वाले नबी के हक़ में एक आम दलील बनाई जिसके यहूदी और मसीही दोनों मुंतज़िर थे और जिस की बाबत तमाम सहीफ़ों में पेशनगोइयाँ दर्ज हैं ।

इन वजूह की मौजूदगी में यह कोई हैरत अंगेज़ बात नहीं है । हज़रत मुहम्मद साहिब ने अपनी निस्बत कुरआन में यूँ तहरीर कर दिया कि :-

النَّبِيُّ الْأُمِّيُّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ

इस रसूल को जो नबी है उम्मी जिसको पाते हैं अपने पास लिखा हुआ तौरैत और इंजील में  
(सूरा आराफ़ 157 आयत)

और फिर एक जगह और भी सरीह अल्फ़ाज़ में अपनी पेशीगोइयों का यूँ ज़िक़्र किया है कि :-

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا  
 بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدٌ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ

तर्जुमा: यानी और जब कहा ईसा मर्यम के बेटे ने ए बनी-इस्राइल ! में भेजा आया हूँ अल्लाह का तुम्हारी तरफ सच्चा करता उस को जो मुझसे आगे है तौरत और खुशखबरी सुनाता एक रसूल की जो आयोगा मुझसे पीछे उस का नाम है अहमद (सूरा सफ़ 6 आयत)

इन वाकियात की मौजूदगी में मुसलमानों के लिए यह बिलकुल फ़ित्री व कुदरती बात है कि अहदेअतीक और अहदेजदीद के सहीफ़ों में इन पेशीनगोइयों को तलाश करें जिनका हज़रत मुहम्मद साहिब को.....यकीन था कि वो इन सहीफ़ों में मुस्ततिर थीं हमारी गरज़ यह है कि हम इस छोटे से रिसाले में किताब मुक़द्दस के इन खास मुक़ामात का मुताअला करें जो अहले इस्लाम बतौर हवाला पेश करते हैं और जिन में पेशीनगोइयों के होने के दावेदार हैं और हमें यह दिखाना है कि इस आयत में भी किसी ऐसे सच्चे नबी की बाबत पेशनगोई नहीं है जो सय्यदना मसीह के बाद आगे आएगा ।

## 1- इस्तसना की किताब 18 बाब 15 से 21 आयत तक

हज़रत मुहम्मद साहिब के हक़ में किताब मुक़द्दस का जो मुक़ाम अहले इस्लाम सबसे ज़्यादा पेश करते हैं वो इस्तसना की किताब के 18 बाब की 15 आयत से 21 आयत तक है जहां यूं लिखा है :-

"खुदावंद तेरा खुदा तेरे लिए तेरे ही दर्मियान से तेरे ही भाईयों में से मेरी मानिंद एक नबी बरपा करेगा। तुम उस की सुनना....में उनके लिए इन ही के भाईयों में से तेरी मानिंद एक नबी बरपा करूंगा और अपना कलाम उस के मुँह में डालूंगा और जो कुछ में उसे हुक्म दूंगा वही वो उनसे कहेगा । और जो कोई मेरी इन बातों को जिनको वो मेरा नाम लेकर कहेगा ना सुने तो मैं उनका हिसाब इस से लूंगा ।"

मुसलमान मुनाज़िरीन यह दिखाने को की इस मुन्दरीजा बाला इबारत में हज़रत मुहम्मद साहिब के हक़ में पेशनगोई है इन अल्फ़ाज़ पर-ज़ोर देते हैं कि " इन ही के भाईयों में से " उनका दाअवा यह है कि इन अल्फ़ाज़ से साफ़ ज़ाहिर है कि वो आने वाला नबी जिसकी बाबत यहां पेशनगोई है वो बनी-इस्राइल में से नहीं बल्कि उनके भाईयों में से बरपा होगा और उन से मुराद बनी इस्माईल हैं जिनसे हज़रत मुहम्मद साहिब पैदा हुए ।

इस लिए इस नबुवत का मिस्ताक सिवाए नबी आजम अरबी के और कोई नहीं हो सकता नीज़ इन अल्फ़ाज़ पर भी ज़ोर दिया जाता है कि "तुज़ सा" यानी मूसा की मानिंद वह नबी बरपा होगा चुनांचे बहुत सी बातों में उनके दर्मियान मुशाबहत बताई जाती है मसलन दोनों ने शादी की और उन की औलाद हुई और दोनों ने तलवार चलाई । मसीहियों को याद दिलाया जाता है कि उनमें से एक काम भी मसीह ने नहीं किया।

## "भाइयों" से बनी-इसाइल मुराद हैं

जब हम मुंदरजा बाला आयात को इस्लामी तावील की रोशनी में जांचते हैं तो यह तावील एक बड़े मुग़ालता पर मबनी मालूम होती है । सिवाए तास्सुब के और कोई बात उस के मानने पर मजबूर नहीं कर सकती कि " तेरे ही भाइयों में से " के फ़िक़रा से ग़ैर यहूद मुराद हैं। क्योंकि यह लफ़ज़ "भाइयों" इसी इस्तसना की किताब में बराबर इसी माअनी में मुख्तलिफ़ मुक़ामात में इस्तिमाल हुआ है। इस किस्म के मुक़ामात के चंद हवालों से साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि यह दाअवा कि बनी-इसाइल के भाइयों से बनी इस्माइल मुराद हैं बिलकुल बे-बुनियाद है। इस्तसना की किताब के 17 वें बाब की 14 वीं और 15 वीं आयत में " भाइयों " का लफ़ज़ सरीहन खुद इस्राइलियों के लिए इस्तिमाल हुआ है । चुनांचे लिखा है :-

"जब तू इस मुल्क में जिसे खुदावंद तेरा खुदा तुझको देता है पहुंच जाये और इस पर कब्ज़ा करके वहां रहने और कहने लगे कि इन क़ौमों की तरह जो मेरे गिर्दागिर्द हैं मैं भी किसी को अपना बादशाह बनाऊँ तो तू बहर-ए-हाल फ़क़त उसी को अपना बादशाह बनाना जिसको खुदावंद तेरा खुदा चुन ले। तू अपने भाइयों में से ही किसी को अपना बादशाह बनाना और परदेसी को जो तेरा भाई नहीं अपने ऊपर हाकिम ना कर लेना।"

इन आयतों की तशरीह की चंदाँ ज़रूरत नहीं क्योंकि सबको अच्छी तरह से मालूम है कि यहूदीयो का पहला बादशाह समुएल नबी ने खुद खुदा की हिदायत के मुताबिक़ मम्सुह किया । वो कोई इस्माइली नहीं बल्कि साउल बिन कैस इस्राइल के क़बीला बनियामिन में से था ।

यह 1 समुएल दसवें बाब की 20, 21, 24 वीं आयत से साफ़ ज़ाहिर है चुनांचे यूँ मर्कूम है।

"पस समुएल इस्राइल के सब क़बीलों को नज़दीक लाया और कुरआ बनियामिन के क़बीले के नाम पर निकला। तब वो बनियामिन के क़बीले को खानदान खानदान करके नज़दीक लाया तो मिस्रियों के खानदान का नाम निकला और फिर कैस के बेटे साउल का नाम निकला.....और समुएल ने उन लोगों से कहा तुम उसे देखते हो जिसे खुदावंद ने चुन लिया कि इसकी मानिंद सब लोगों में एक

भी नहीं? तब सब लोग ललकार बोल उठे कि बादशाह जीता रहे । इन बातों से साफ़ ज़ाहिर है कि " भाईयों " का इत्लाक़ इसी क़ौम यानी यहूद पर आया है।

अलावा बर्री इस्तसना की किताब के 15 बाब में भी यह लफ़ज़ बिलकुल इसी मअनी में इस्तिमाल हुआ है चुनांचे मर्कूम है :-

"अगर तेरा कोई भाई ख्वाह इब्रानी मर्द हो या इब्रानी औरत तेरे हाथ बिके और वो छः बरस तक तेरी खिदमत करे तो तू सातवें साल उस को आज़ाद हो कर जाने देना ।" (12 वीं आयत)  
फिर अहबार की किताब के 25 वें बाब की 46 वीं आयत में लिखा है कि "लेकिन बनी-इस्नाइल जो तुम्हारे भाई हैं उनमें से किसी पर तुम सख्ती से हुक्मरानी ना करना।"

इन मुकामात से और उन की मानिंद बहुत सी दीगर इबारात से साफ़ ज़ाहिर है कि जब खुदा ने हज़रत मूसा को फ़रमाया कि मैं उनके लिए उनके भाईयों में से एक नबी बरपा करूंगा तो इस से अरब का कबीला कुरैश मुराद नहीं था बल्कि खुद बनी-इस्नाइल ही मुराद थे और यह बात ऐसी साफ़ और वाज़ेह है कि इस को राज़ तास्सुब पर हैरत होती है जो उस के खिलाफ़ तावील करने पर मजबूर करता है।

मुस्लिम मुनाज़िरीन की यह ग़लती और भी तावील अफु नहीं है क्योंकि खुद उनके अपने कुरआन शरीफ़ में यह लफ़ज़ "भाई" उसी मअनी में इस्तिमाल हुआ है चुनांचे सूरा आराफ़ की 84 वीं आयत में यूं मर्कूम है :-

"وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ قَالَ يَا قَوْمِ ۖ"

तर्जुमा : यानी और मदयन को भेजा उन का भाई शुऐब बोला ए मेरी क़ौम ।

कुरआन शरीफ़ की इस आयत में शुऐब अपने कबीले को "ए मेरी क़ौम" के अल्फ़ाज़ से खिताब कर रहे हैं और फिर भी खुदा कह रहा है कि हमने मदयन के पास उनके भाई शुऐब को भेजा।

इस आयत पर ज़्यादा लिखना फ़ुज़ूल है क्योंकि अल्फ़ाज़ से खुद ज़ाहिर है कि लफ़ज़ "भाई" से यहां खुद अपनी क़ौम मुराद है इस्लामी दलील के मुताबिक़ तो लफ़ज़ " भाईयों" से अदोमी मुराद होंगे इस लफ़ज़ "भाईयों" के मुताल्लिक़ एक और बात पर गौर करना है और वो ये है कि अगर हम बफ़रज़ महाल यह मान भी लें कि इस्तसना के 18 वें बाब में "भाईयों" का लफ़ज़ इसी मफ़हूम में इस्तिमाल हुआ है जिसमें अहले इस्लाम पेश करते हैं तो भी हज़रत मुहम्मद साहिब इस से खारिज रह जाते हैं क्योंकि याद रहे कि इस्माइल इस्नाइल के भाई नहीं बल्कि चचा थे । इस्नाइल यानी याकूब के भाई एसु थे। यह पैदाइश की किताब के 25 वें बाब की 24 वीं आयत से 26 वीं आयत तक की इबारात

से साफ़ ज़ाहिर है " और जब उस के वज़ा हमल के दिन पूरे हुए तो क्या देखते हैं कि इस के पेट में तवाम हैं और पहला जो पैदा हुआ तो सुर्ख़ था और ऊपर से ऐसा जैसे पशमीना और उन्हों ने इस का नाम एसु रखा उस के बाद उस का भाई पैदा हुआ और इस का हाथ एसु की एड़ी को पकड़े हुए था और इस का नाम याक़ूब रखा गया।"

लिहाज़ा मुसलमानों की तावील के मुताबिक़ इसी नबी को माअहूद को बनी इस्माईल से नहीं बल्कि अदोमीयों में से होना चाहिए और किताब मुक़द्दस के अल्फ़ाज़ से यह साफ़ ज़ाहिर है । चुनांचे लिखा है "तू किसी अदोमी से नफ़रत ना रखना क्योंकि वो तेरा भाई है।"(इस्तसना 23 बाब 7 आयत) ।

## **"तुझसे या तेरी मानिंद " से मुराद रुहानी और मन्सबी मुशाबहत है"**

इस पेशनगोई के अल्फ़ाज़ के मुताबिक़ कि मैं उनके लिए उनके भाईयों में से तुझसे एक नबी बरपा करूंगा।" मुसलमानों का हज़रत मूसा और हज़रत मुहम्मद साहिब के दर्मियान मुशाबहत साबित करने की कोशिश करना भी लायानी है। यहां जिस मुशाबहत की तरफ़ इशारा है वो कोई जिस्मानी मुशाबहत नहीं है बल्कि रुहानी और मन्सबी मुशाबहत है मुसलमान जो जिस्मानी मुशाबहत पर ज़ोर देते हैं उनको उन मुश्किलात का सामना करना पड़ता है जो इस मुशाबहत को मानने से पेश आती हैं मसलन अहले इस्लाम को फ़ख़ है कि हज़रत मुहम्मद साहिब उम्मी नबी थे जिसका मतलब उनके बयान के मुताबिक़ यह है कि वो लिखना पढ़ना नहीं जानते थे लेकिन किताब मुक़द्दस में मुसा की बाबत लिखा है कि " मूसा ने मिस्रियों के तमाम उलूम की तालीम पाई "(आमाल सातवाँ बाब 22 वीं आयत )

हमारे मुसलमान भाईयों को इस बात में मुशाबहत दिखाने में निहायत दिक्कत पेश आएगी। फिर कुरआन शरीफ़ में यह भी आया है कि हज़रत मूसा ने बहुत से मोज़ज़े दिखाए चुनांचे मर्कूम है

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ (सूरा बकर आयत 92)

यानी तहक़ीक़ आया मूसा तुम्हारे पास निशानीयां लेकर।

लेकिन खुद कुरआन शरीफ़ की शहादत से साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत मुहम्मद साहिब ने कोई मोज़िज़ा नहीं दिखाया चुनांचे यूँ मर्कूम है "

إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ

यानी निशानीयां तो अल्लाह के इख़तियार में हैं और मैं तो साफ़ साफ़ आगाह करने वाला हूँ ।

(सूरा अल-अनकबूत 50 वीं आयत)



फिर सूरा बनी-इसाइल की 59 वीं आयत में मर्कूम है :-

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ

यानी ए मुहम्मद हमको किसी बात ने नहीं रोका कि तुझे मोज़ात के साथ भेजते सिवा उस के कि अगलों ने उनको झुठलाया ।

अगर इस किस्म की शख्सी मुशाबहत पुर इस्सार किया जाये तो फिर यह दिखाने में निहायत दिक्कत पेश आएगी कि किस लिहाज़ से हज़रत मुहम्मद साहिब को मूसा की मानिंद कहा जा सकता है? यह कहना कि दोनों ने शादियां कीं और तलवार चलाई बहुत कम एहमीयत रखता है क्योंकि इसी तरह तो झूटे नबी मुसल्लमा और दूसरे कज़़ाब नबियों ने भी यही किया। यह बशारत इस नबी के लिए है जो बनी-इसाइल की तरफ़ भेजा जाने को था । लेकिन इस पेशनगोई के मुताल्लिक एक और बात पर गौर करना ज़रूरी है। इस बाब मज़क़ुरा की 15 वीं आयत में लिखा है कि खुदा फ़रमाता है कि "तेरे लिए" यानी बनी-इसाइल के लिए वह नबी मबऊस होगा । अब ख़ूब वाज़ेह है कि हज़रत मुहम्मद साहिब ने एक खास मअनी में यहूदियों के लिए नहीं बल्कि अरबों के लिए अपने आपको पैगंबर बताया चुनांचे सूरा तौबा में मर्कूम है कि :-

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ

यानी आया है कि तुम्हारे पास रसूल तुम्हारे में का (सुरह तौबा 128)

और फिर सूरा इब्राहीम की चौथी आयत में लिखा है कि :-

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ

और कोई नहीं रसूल भेजा हमने मगर बोली बोलता अपनी क़ौम की ।

फिर सूरा क़सस की 46 वीं आयत में यूं मुन्दरज है:-

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُمْ مِّنْ نَّذِيرٍ مِّنْ قَبْلِكَ

यानी और तू ना था तुर के किनारे जब हमने आवाज़ दी लेकिन यह महर है तेरे रब की कि तू डर सुनादे उन लोगों को जिन पास नहीं आया कोई डर सुनाने वाला तुझसे पहले।

जब नाज़रीन मज़क़ुरा बाला तीनों आयात कुरानी का बग़ौर मुताअला करेंगे तो साफ़ मालूम हो जाएगा कि यह दाअवा किस क़दर सच्चाई से बर्द है कि हज़रत मुहम्मद साहिब इस बशारत के मिस्ताक़ हैं

जिसके मुताबिक़ "तेरे लिए" यानी यहूदीयों के लिए नबी का बरपा होना बयान किया गया है। इस में कोई शक नहीं कि हज़रत मुहम्मद साहिब इब्रानी से नावाकिफ़ थे और मशहूर मिशकात-उल-मसाबिह की किताब अल-आदाब में बयान है कि हज़रत मुहम्मद साहिब ने अपने कातिब जैद को इब्रानी सीखने की हिदायत की ताकि यहूदीयों के साथ खत-ओ-किताबत कर सकें।

अगर हज़रत मुहम्मद साहिब ऐसे लोगों की तरफ़ मबऊस हुए जिनमें आपसे पहले कोई नबी मबऊस नहीं हुआ तो आप यहूदीयों के लिए हरगिज़ मबऊस नहीं हुए थे क्योंकि खुद कुरआन शरीफ़ की शहादत के मुताबिक़ उनमें पैग़म्बरों का तवील सिलसिला जारी रह चुका था। यह दो पुरमाअनी अल्फ़ाज़ "तेरे लिए" इस दाअवा की तरदीद को काफ़ी हैं कि हवाला ज़ेर-ए-बहस में हज़रत मुहम्मद साहिब के लिए पेशनगोई है। इस आयत का सरीह मतलब यह है कि इस बशारत से मुराद सय्यदना मसीह हैं जो एक खास माअनी में यहूदीयों के लिए भेजे गए जैसा कि खुद मसीह ने इन अल्फ़ाज़ में दाअवा किया है :-

" मैं इस्राइल के घराने की खोई हुई भेड़ों के सिवा और किसी के पास नहीं भेजा गया"  
(मत्ती 15 बाब 24 आयत )

## इस बशारत के मुताबिक़ यह नबी यहूदीयों में से बरपा होने वाला था

इस्तसना का हवाला साफ़ तौर से बताता है कि नबी माअहूद यहूदीयों के "दर्मियान से" बरपा होने को था। यह बशारत किसी मअनी में भी हज़रत मुहम्मद साहिब पर सादिक़ नहीं आ सकती क्योंकि वो यहूदिया में नहीं बल्कि सैंकड़ों मील के फ़ासिला पर मक्का में अरब के बुत परस्तों के दर्मियान पैदा हुए । बरअक्स उस के इस पेशनगोई में मसीह की बाबत बशारत है क्योंकि वो दाऊद के शहर बैतलहम में पैदा हुआ और तमाम उम्र के दर्मियान रहा जिनमें मुर्सल हो कर आया था । मसीह बिलकुल लफ़ज़ी माअनी में बनी-इस्राइल के "दर्मियान से" बरपा हुआ और मूसा की इस अजीब पेशनगोई की हर बात इस में पूरी हुई । इस का सबसे बड़ा काम अपने लोगों को गुनाह की गुलामी से मख़िलसी बख़्शना था । ठीक जिस तरह मूसा ने बनी-इस्राइल को मिस्र की गुलामी के जुए से बचाया था और ऐन जिस तरह मूसा ने इस्राइल की नाफ़रमानी के सबब से खुदा से सिफ़ारिश की थी इसी तरह अब मसीह भी अपने लोगों के लिए बड़ा शफ़ी बन कर खुदा ताअला के दहने हाथ बैठा है।

**इंजील में यह पेशनगोई सय्यदना ईसा मसीह के हक़**

## में दिखाई गई है

आखिरी बात इस बशारत के मुताल्लिक यह है कि कलाम इलाही यानी इंजील मुकद्दस में यह साफ तौर से बताया गया है कि मूसा की यह पेशनगोई सय्यदना ईसा मसीह के हक में है । चुनांचे आमाल की किताब में लिखा है :-

"मूसा ने कहा कि खुदावंद खुदा तुम्हारे भाईयों में से तुम्हारे लिए मुझसा एक नबी पैदा करेगा। जो कुछ वो तुमसे कहे उस की सुनना। और यूं होगा कि जो शख्स इस नबी की ना सुनेगा वो उम्मत में से नेस्त व नाबूद कर दिया जाएगा बल्कि समुएल से लेकर पिछलों तक जितने नबियों ने कलाम किया इन सबने इन दिनों की खबर दी है । तुम नबियों की औलाद और इस अहद के शरीक हो जो खुदा ने तुम्हारे बाप दादा से बाँधा जब इब्राहीम से कहा कि तेरी औलाद से दुनिया के सब घराने बरकत पाएँगे । खुदा ने अपने खादिम को उठा कर पहले तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम में से हरा एक को इस की बदियों से हटा कर बरकत दे।" (आमाल 3 बाब 22-26 आयत)

इस के अलावा खुद सय्यदना मसीह ने एक मौके पर कतई तौर से इन अल्फ़ाज़ में कहा कि :-

"अगर तुम मूसा का यक़ीन करते तो मेरा भी यक़ीन करते इस लिए कि उसने मेरे हक में लिखा है" (युहन्ना 5:46 आयत ) पस अब नतीजा साफ़ ज़ाहिर है कि इस्तसना के अठारहवें बाब की बशारत सिवाए ईसा इब्ने मर्यम के और किसी के लिए नहीं है और हर ज़माना में यह इलाही पैग़ाम लोगों को आगाह करता रहा है कि "जो कोई मेरी बातों को जो वो मेरे नाम से कहेगा ना सुनेगा तो मैं उस का हिसाब उस से कहूँगा ।"

## (2) इस्तसना बाब 33 आयत 2

किताब मुकद्दस का दूसरा मुक़ाम जो अहले इस्लाम हज़रत मुहम्मद के हक में पेशनगोई के मुताल्लिक पेश करते हैं वो इस्तसना की किताब के 33 बाब की 2 आयत है जिसमें यूं मर्कूम है "खुदावंद सिनाई से आया और शईर से उन पर आशकारा हुआ। वो कोह-ए-फ़ारान से जलवागर हुआ।" इस आयत के मुताल्लिक मुस्लिम मुनाज़िरीन यूं लिखते हैं कि "मज़कूरा बाला हवाला तीन हिस्सों में तकसीम किया जा सकता है । पहले हिस्से के अल्फ़ाज़ कि "खुदावंद सिनाई से आया उन हैबतनाक कुदरत के कामों में जो हज़रत मूसा के ज़रीये से हुए और इस मज़हब में जिसकी तब्लीग़ हज़रत मूसा ने की पुरे हुए हैं और दूसरे हिस्से के अल्फ़ाज़ कि " शईर से उन पर आशकारा हुआ "हज़रत ने ईसा हैं और उस इंजील में जिसकी आपने मुनादी की पाया-ए-तकमील को पहुंचे हैं। इस के बाद अल्लाह ताअला अपने खादिम की ज़बानी एक आने वाले वाक़िया का ज़िक्र करता है और इस तीसरे हिस्से के यह अल्फ़ाज़ कि:-

"वो कोह 'ए' फ़ारान से जलवागर हुआ" अजीब और लफ़्ज़ी तौर पर हज़रत मुहम्मद में पूरे होते हैं।  
(देखो बाइबले मुहम्मद मतबूआ कलकता 1320 हि सफ़ा 17)

## फ़ारान अपनी जुग्राफियाई हालत के एतबार से मुहम्मद साहिब और सय्यदना मसीह की बशारत का मौजू नहीं हो सकता

अगर यह मुसलमान मुसन्निफ़ जिसने मज़कूरा बाला इबारात को लिखा है इस बियाबान के जुग्राफिया का मुताअला कर लेता जिसमें बनी-इस्राइल मिस्र से निकल कर कनआन के मुल्क मौऊद की तरफ़ जाते वक़्त गर्दिश करते रहे और कम अज़ कम सरसरी तौर पर क़दीम दुनिया के इस हिस्सा का नक़शा भी देख लेता तो जी फ़हम लोगों में अपनी हंसी कराने से बच जाता।

इस खि़त्ता अर्ज़ के खाका पर नज़र डालते ही मालूम हो जाएगा कि सिनाई, शईर और फ़ारान जज़ीरा नुमाए सिनाई के तीन पहाड़ हैं जो फिलिस्तीन और बहीरा अहमर के दर्मियान आस-पास वाक़ेअ हैं। इस हवाला मज़कूरा में हज़रत मूसा और सय्यदना मसीह और हज़रत मुहम्मद साहिब के हक़ में बशारत निकालना ना सिर्फ़ ख़्याली और जुग्राफियाई एतबार से ग़लत है बल्कि इस मुक़ाम के असल मतलब से भी गुरेज़ करना है जिसमें किसी नबी की तरफ़ ज़रा भी इशारा नहीं पाया जाता। इस आयत में गुज़िश्ता तवारीख़ी वाक़ियात की तरफ़ इशारा है और इस में बनी-इस्राइल को इस इलाही जलाल और कुदरत के अजीब इज़हार की याद दिलाई गई है जो उन्होंने बियाबान में मुसाफ़िरत के दौरान में मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर देखा था। नाज़रीन इबारात जेल से इस आयत का मुक़ाबला करके उस की तस्दीक़ कर सकते हैं ख़ुरूज की किताब 19 बाब गिनती की किताब 13 14 और 16 बाब।

किसी एक लफ़्ज़ या आयत को मसीही सहीफ़ों में से लेकर उसे असल इबारात से बिलकुल जुदा कर के इस की ख़ाली तावील करना ऐसी सख़्त ग़लती है जो मुसलमान मुनाज़िरीन बराबर किया करते हैं। ऐसा मालूम होता है कि उनको कभी यह ख़्याल भी नहीं आता कि इन नामों और जगहों के हवालों को किताब मुक़द्दस के उन दूसरे मुक़ामात में भी देख लें जिनसे शायद सवालात ज़ेर-ए-बहस पर कुछ रोशनी पड़े। अब इस आयत से जो फ़ीलहाल ज़ेर-ए-नज़र है मालूम हो जाएगा कि इस का नतीजा बिलकुल ग़लत निकलता है। अगर "बाइबले मुहम्मद" के मुसन्निफ़ जनाब अदहु मियां किताब मुक़द्दस में इन बहुत से मुक़ामात का मुताअला करलेते जिनमें शईर और फ़ारान दोनों का ज़िक़्र आया है तो हरगिज़ ऐसी बेवकूफी ना करते कि इन पहाड़ों से सय्यदना मसीह और हज़रत मुहम्मद साहिब की रिसालत की बशारत मुराद लेते। इस खि़त्ता मुल्क के जुग्राफिया के मुताअला से साफ़ ज़ाहिर है कि मसीह ने "शईर का सफ़र हरगिज़ नहीं किया और हज़रत मुहम्मद साहिब को फ़ारान का कुछ इल्म ना था। असल वाक़िया यह है कि इस ज़माना में ज़बले शईर अदोमीयों का मुल्क था और

बहर-ए-मुर्दार के जुनूब में कुछ फ़ासिले पर यह पहाड़ वाक़ेअ है। पैदाइश की किताब 32 बाब की 13 आयत से यह बख़ूबी ज़ाहिर है जहां यूं लिखा है कि और "याक़ूब ने अपने आगे आगे कासिदों को अदोम के मलिक को जो शईर की सर ज़मीन में है अपने भाई एसु के पास भेजा और "यही बात पैदाइश के 36 बाब की 8,9 आयतों से और भी ज़्यादा वाज़ेह हो जाती है।" पस एसु जिसे अदोम भी कहते हैं। कोह शईर में रहने लगा और एसु का जो कोह शईर के अदोमीयों का बाप है यह नसब नामा है।

अलावाबरें बियाबान में बनी-इसाइल की मुसाफ़िरत के अहवाल का मुताअला यह ज़ाहिर करता है कि इन को मुल्क कनआन में बनाने के लिए अदोमीयों के दर्मियान से हो कर गुज़रना ज़रूर था। चुनांचे लिखा है :-

तब मूसा ने कादस से अदोम के बादशाह के पास एलची रवाना किए और कहला भेजा कि तेरा भाई इसाइल यह अर्ज़ करता है कि तू हमारी सब मुसीबतों से जो हम पर आए वाक़िफ़ है..... सो हम को अपने मुल्क में से हो कर जाने की इजाज़त दे..... शाह अदोम ने कहला भेजा कि तू मेरे मुल्क से हो कर जाने नहीं पायगा । वर्ना में तलवार लेकर तेरा मुकाबला करूंगा । (गिनती 20 बाब 14, 17, 18 आयतें ) अब इस इबारत से साफ़ ज़ाहिर है कि मिस्र से निकल कर मुसाफ़िरत करते वक़्त अदोमीयों की सरज़मीन में और इसी तरह कोह 'ए' शईर कनआन पहुंचने से पेशतर रास्ता में थे।

अलावा बरें इस्तसना की किताब के पहले बाब की दूसरी आयत में यू मर्कूम है कि "कोह शईर की राह से होरब से कादिस बरनीअ तक ग्यारह दिन की मंज़िल है।" अब इस हवाले से यह बात और भी मुस्तहकम हो जाती है और हम साबित कर चुके हैं कि जब शईर होरब और कादिस बरनीअ के दर्मियान वाक़ेअ है और यह दोनों आखिर अलज़िकर मुक़ामात बहर-ए-मुर्दार के जुनूब में हैं। अब नाज़रीन पर इस मसले की खुराफ़ात बख़ूबी वाज़ेह हैं और हैरत तो यह है कि बहोतेरे मशहूर मुसलमान मुसन्निफ़ों ने भी यही दाअवा किया है कि लफ़ज़ जबल शईर का इलाका सय्यदना मसीह की रिसालत से है। चुनांचे एक और मुसलमान मुसन्निफ़ रकमतराज़ है कि " शईर मुल्क-ए-शाम के एक पहाड़ का नाम है जिस पर मसीह जाया करते थे और जहां आपको फ़रिशतों की मार्फ़त इंजील के मुताल्लिक अहकाम मिले" (प्रूफ़ आफ़ प्रोफ़ेट मुहम्मद फ़्रोम दी बाइबल मतबूआ लाहौर सफ़ा 12) हमको मालूम है कि मसीह बैत लहम में पैदा हुआ है और शुमाली सूबा गलील के शहर नासरत में परवरिश पाई और तमाम उम्र अपने आबाई मुल्क में लोगों को तालीम देता रहा। मसीह का अदोम में होना तो दूर की बात है बल्कि बरअक्स उस के हज़कईल नबी ने साफ़ तौर पर बता दिया है कि अहले अदोम यानी जबल शईर के बाशिंदे यहूदीयों के सख़्त मुखालिफ़ थे। इस नबी की किताब के 35 बाब में उनके शहर की तबाही की पेशनगोई निहायती सफ़ाई से दर्ज है। लिहाज़ा यह दाअवा कि

यह अल्फ़ाज़ "वो शईर से उन पर आशकारा हुआ" सय्यदना मसीह में और इंजील में जिसकी आपने मुनादी की पूरे होते हैं बिलकुल बे-बुनियाद है और अक्ल और किताब से बिलकुल उस का कोई ताल्लुक नहीं।

यह निहायत अफ़सोसनाक बात है कि मुसन्निफ़ीन मज़क़ूरा फ़ारान की जुगराफ़ियाई हालत से भी ऐसे ही नावाक़िफ़ हैं जैसे जबल शईर से। हज़रत मुहम्मद साहिब का फ़ारान में पैदा होना या उनका वहां रहना तो दूर की बात है लेकिन बरअक्स उस के काफ़ी सबूत मौजूद है कि जबल फ़ारान मक्का से जो कि हज़रत मुहम्मद साहिब का मुसल्लमा पैदाइशी मुक़ाम है जुनूब को पाँच सौ मील के फ़ासले पर वाक़ेअ है और ना सहीफ़ा में और ना तवारीख में कोई ऐसी बात है जिससे पैगंबर इस्लाम का कोई भी इलाका जबल फ़ारान से होना साबित हो सके। फ़ारान के मुताल्लिक किताब मुक़द्दस की इबारत को देखने से यह बात और भी सरीह तौर पर वाज़ेह हो जाएगी। असल बात यह है कि फ़ारान सिनाइ के शुमाल में एक पहाड़ था जैसा कि किताब मुक़द्दस के इस मुक़ाम से ज़ाहिर है कि "तब बनी-इस्राइल दशत'ए' सीना से कूच करके निकले और वुह अब्र दशत-ए-फ़ारान में ठहर गया" (गिनती 10 बाब 12 आयत ) अलावा बरीं निहायत सफ़ाई के साथ बयान हुआ है कि जब बनी-इस्राइल मिस्र से सफ़र करके कनआन के जुनूबी हिस्सा के करीब पहुंचे तो मूसा ने "दशत फ़ारान" से वाअदे की सरज़मीन में मुख़्बरी के लिए चंद जासूस भेजे। चुनांचे यूं मर्कूम है "इस के बाद वो लोग हसीरात से रवाना हुए और दशत-ए-फ़ारान में पहुंच कर उन्होंने डेरे डाले.....और खुदावंद ने मूसा से कहा तू आदमीयों को भेज कर वो मुल्क कनआन का जो मैं बनी-इस्राइल को देता हूँ हाल दरयाफ़त करें (गिनती बाब 12:16 आयत से बाब 13:2 आयत) इन जासूसों का वापिस आना खुदा के जलाल के ज़ाहिर होने का एक ख़ास मौक़ा था। चुनांचे लिखा है कि "इस वक़्त ख़ेमा इज्तिमा में सब बनी-इस्राइल के सामने खुदावंद का जलाल नुमायां हुआ"(गिनती बाब 14:10आयत) अब नाज़रीन खुद ही फ़ैसला करलें कि इन अल्फ़ाज़ से कि "फ़ारान ही के पहाड़ से वो आशकारा हुआ" कोई भी इशारा उस की ज़ात की तरफ़ पाया जाता है जो मक्का में फ़ारान से पाँच सौ मील के फ़ासिला पर जुनूब की तरफ़ पैदा हुआ? या इस से खुदा का वो ख़ास जलाल मुराद है जो बनी-इस्राइल पर फ़ारान में बमूजब तहरीर मज़क़ूरा नुमायां हुआ ।

### (3) पैतालीसवां 45 ज़बूर

चंद मुसलमान मुसन्निफ़ीन दाअवा करते हैं कि 45 ज़बूर में हज़रत मुहम्मद साहिब के हक़ में बशारत है और वो ख़ासकर तीसरी चौथी और पांचवी आयत इस ज़बूर की पेश करते हैं और कहते हैं कि उनमें हज़रत मुहम्मद साहिब का सरीह ज़िक्र मौजूद है चुनांचे वो अल्फ़ाज़ यह हैं :-

"ए ज़बरदस्त ! तू अपनी तलवार को जो तेरी हशमत व शौकत है अपनी कमर से हमाइल कर। और सच्चाई और हलीम और सदाकत की खातिर अपनी शानोशौकत में इकबालमंदी से सवार हो और तेरा दाहिना हाथ तुझे मुहीब काम दिखाएगा। तेरे तीर तेज़ हैं। वो बादशाह के दुश्मनों के दिल में लगे हैं।"

## इस ज़बूर में एक इलाही हस्ती का ज़िक्र है

अगर नाज़रीन इस तमाम ज़बूर को जिसमें यह आयतें पाई जाती हैं गौर से पढ़ेंगे तो उनको मालूम हो जाएगा कि इस में हज़रत मुहम्मद साहिब का कोई ज़िक्र नहीं है ग़ालिबन इस में पहले सुलेमान बादशाह के एक गौर मुल्की शाहज़ादी के साथ शादी करने की तरफ़ इशारा है और इस शादी का ज़िक्र सलातीन की पहली किताब में मौजूद है चुनांचे लिखा है कि "और सुलेमान ने मिस्र के बादशाह फिरऔन से रिश्तेदारी की और फिरऔन की बेटी ब्याह ली और जब तक अपना महल और खुदावंद का घर और यरूशलेम के चौगिर्द दीवार ना बना चुका उसे दाऊद के शहर में ला रखा (1 सलातीन 3 बाब 1) लेकिन अगर गौर के साथ इस ज़बूर का मुताअला किया जाये । तो ज़ाहिर होगा कि इस का मतलब और भी गहरा है और एक ऐसे शख्स की तरफ़ इशारा है जो सुलेमान से बहुत बुजुर्ग व बरतर है और जिस में पुर-इस्सार तौर से उलूहियत पाई जाती है। चुनांचे छठी आयत में जिसे मुसलमान मुसन्निफ़ीन इक़तिबास करते वक़्त बड़ी एहतियात से छोड़ देते हैं इस शख्स को यूं खिताब किया है "तेरा तख़्त ऐ खुदा अबद-उल-आबाद है" सिर्फ़ यही आयत मुसलमानों के दाअवा को बे-बुनियाद साबित करने के लिए काफ़ी है क्योंकि ये तो सब मानते हैं कि हज़रत मुहम्मद साहिब ने कभी उलूहियत का दाअवा नहीं किया।

## इंजील में इस ज़बूर का हवाला मसीह के हक़ में पेश किया गया है

बरअक्स उस के इंजील में बड़ी सफ़ाई के साथ यह ज़बूर सय्यदना ईसा मसीह की शान में इस्तिमाल हुआ है जिसकी ताज़ीम मुसलमान कलामउल्लाह व रुहुल्लाह के खिताबों से करते हैं । चुनांचे यूं मर्कूम है । "मगर बेटे की बाबत कहता है कि ऐ खुदा तेरा तख़्त अबद-उल-आबाद रहेगा। (इब्रानियों

बाब 1:8) खुदा के कलाम की इस इबारत से साफ़ ज़ाहिर है कि यह ज़बूर मसीह की शान में है और दुल्हन से मसीही कलीसिया मुराद है और यह ख्याल कि मसीही कलीसिया मसीह की दुल्हन है पाक नविशतों में बार-बार पाया जाता है और इस से ज़बूर ज़ेर-ए-बहस के मुताल्लिक़ जो हमारी राय है इस की और भी तस्दीक़ होती है चुनांचे पौलुस रसूल कुरंथियों की कलीसिया को लिखते वक़्त कहता है "मैंने एक ही शौहर के साथ तुम्हारी निस्बत की है ताकि तुमको पाक दामन कुंवारी की मानिंद मसीह के पास हाज़िर करूँ" (2 कुरंथियों 11 बाब 2) और इसी तरह युहन्ना रसूल अपनी रोया कलमबंद करते हुए लिखता है "फिर मैंने शहर मुक़द्दस नए यरूशलेम को आसमान पर से खुदा के पास उतरते देखा और वो इस दुल्हन की मानिंद आरास्ता था जिसने अपने शौहर के लिए सिंगार क्या हो।" (मुकाशफ़ा 21 बाब 2)

मुसलमान मुनाज़िरीन इस ज़बूर में "तलवार" और "तीर" के ज़िक्र से हुज्जत पेश करते हैं कि यह मसीह के हक़ में नहीं है और फिर फ़ख़्र के साथ पूछते हैं कि क्या हज़रत ईसा भी कभी जंगी सिपाही थे गोया इसी बात पर ज़बूर की बशारत के मसीही या मुहम्मदी होने का दार-ओ-मदार है। उनको यह याद नहीं रहता कि लफ़ज़ तलवार रुहानी माने भी इस्तिमाल होता है। हकीकत तो यह है कि इसी मअनी में यह लफ़ज़ इंजील में इस्तिमाल हुआ भी है चुनांचे पौलुस रसूल अपने मसीही नव-मुरीदों को " इस दुनिया की तारीकी के हाकिमों और शरारत की इन रुहानी फ़ौजों से जो आसमानी मुक़ामों में हैं "जंग की तरगीब देता हुआ कहता है कि "रूह की तलवार जो खुदा का कलाम है ले लो" (एफ़सियों 6 बाब 17) और जिस ख़ूबी के साथ सय्यदना मसीह ने इस रूह की तलवार का इस्तिमाल क्या वो शैतान से आजमाए जाने के इस बयान से ज़ाहिर है जो मती की इंजील के चौथे बाब में मर्कूम है जहां शैतान की हर आजमाईश का जवाब मसीह ने इलाही नविशता से दिया और यूं उस के हर हमले को रोका।

## (4) ग़ज़ल अलगज़लात 5 बाब 10 से 16 आयत

ग़ज़ल अलगज़लात के पांचवें बाब की 10 वीं आयत से 16 वीं आयत तक बतौर बशारत मुहम्मदी के मुसलमान पेश करते हैं । यह इबारत यूं है :-

"मेरा महबूब सुर्ख़ व सफ़ीद है । वो दस हज़ार में मुमताज़ है। उस का सर ख़ालिस सोना है। उस की जुल्फ़ें पेच दरपेच और कच्चे सी काली हैं। उस की आँखें इन कबूतरों की मानिंद हैं जो दूध में नहा कर लब-ए-दरिया तमकनत से बैठे हों । उस के रुख़सार फूलों के चमन और बिल्सान की उभरी हुई



कियारियाँ हैं। उस के हॉट सोसन हैं जिनसे रक्रीक मुर टपकता है। उस के हाथ ज़बरजद से मुरस्सा सोने के हल्के हैं। उस का पेट हाथीदांत का काम है जिस पर नीलम के फूल बने हों। इस की टांगें कुन्दन के पायों पर संगमरमर के सुतून हैं। वो देखने में लुबनान और खूबी में रशके सर्द है। इस का मुँह अज़बस शीरीं है। हाँ वो सरापा इश्क अंगेज़ है। ए यरुशलिम की बेटियों ! यह है मेरा महबूब । यह है मेरा प्यारा ।

अब ताज्जुब है कि एक बंगाली ज़बान की किताब " बाइबले मुहम्मद" का मुसलमान मुसन्निफ़ इस इबारत मज़क़ूरा के मुताल्लिक यूं लिखता है "अगरचे हज़रत सुलेमान दाना ने शख्स मौसूफ़ की तारीफ़ शायराना पैराया में की है तो भी पूरा बयान आखिरी नबी के नूर और हुस्न व जमाल के बिलकुल मुताबिक़ है। यही नहीं बल्कि इबारत मर्कूमा के आखिरी जुमला में हज़रत सुलेमान ने रूहुल-कुददुस की तहरीक से अपने इस महबूब का नाम भी बता दिया कि वो मुहम्मद है। हम नहीं जानते कि आजकल की मुरव्वजा बाइबल में इब्रानी लफ़ज़ "महमदीम" का जो तर्जुमा दर्ज है वो ब सबब लाइल्मी के है या फ़रेब देने के लिए । अंग्रेज़ी में लफ़ज़ "महमदीम" का तर्जुमा लवली है । अगर यह ग़लत है चाहिए था कि अंग्रेज़ी में इस का तर्जुमा मुअज़्ज़िज़ या महमूद किया जाता । हमारी राय में मुनासिब तो यह था कि उस का तर्जुमा बिलकुल किया ही ना जाता"

(बाइबले मुहम्मद सफ़ा 18, 19)

## यह इबारत खुदा और इस के लोगों की बाहमी मुहब्बत को ज़ाहिर करती है

इस मुसलमान मुसन्निफ़ की मज़क़ूरा बाला इबारत में जो जहालत दिखाई गई है हमको उस के जवाब में यह कहने की कोई ज़रूरत नहीं कि किताब मुक़द्दस की इन आयात ज़ेर-ए-बहस में हज़रत मुहम्मद साहिब का कुछ भी ज़िक्र नहीं है। यह अमर मुसलिमा है कि ग़ज़ल अलगज़लात इस्तिआरा के पैराया में लिखी गई है। इस में एक आला शायराना रंग में इस मुहब्बत के रिश्तेदार का ज़िक्र है जो खुदा और खुदा के बरगज़ीदों के दर्मियान है और या मज़क़ूरा बाला इबारत इस बयान का सिर्फ़ एक हिस्सा है। किताब "बाइबले मुहम्मद" के मुसन्निफ़ ने इबारत के सिलसिला को छोड़कर सिर्फ़ लफ़ज़ "महमदीम" ले कर यह हुज्जत कायम करना चाहा है कि यह एक ज़ाती नाम है और इस से मुराद हज़रत मुहम्मद साहिब हैं ! दरअसल यह लफ़ज़ इल्म यानी कोई ख़ास नाम नहीं है और ना उस का तर्जुमा मुहम्मद है। यह इस्म-ए-नकरा है और इस का इस्म मुशर्क होना इस से ज़ाहिर है कि यह बतौर वाहिद के नहीं बल्कि जमा के सीगा में इस्तिमाल हुआ है और अक्सर किताब मुक़द्दस में चीज़ों और लोगों दोनों के लिए पाया जाता है। हम यह दिखाने के लिए यह लफ़ज़ ना इस्म-ए-

खास है और ना उस के मअनी मुहम्मद हैं चंद हवाले पेश करते हैं जहां यह लफ़ज़ आया है और इस दाअवा मज़कूरा का पता लग जाएगा। अगर नाज़रीन हज़क़ील नबी की किताब के 24 वें बाब की 16 वीं आयत पढ़ेंगे तो यूं लिखा पाएंगे "ए आदमजाद देख में तेरी मंज़ूरे नज़र (**महमदीम**) को एक ही ज़र्ब में तुझसे जुदा करूंगा । लेकिन तू ना मातम करना और ना रोना। और ना आँसू बहाना । "फिर उसी बाब की 18 वीं आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि हिजक़ील नबी की मंज़ूरे नज़र से मुराद उस की बीवी है जिसे खुदा ने वफ़ात दी । क्या यहां भी यही दलील पेश की जाएगी कि चूँकि इस बाब मज़कूरा की सोलहवीं आयत में इब्रानी लफ़ज़ "**महमदीम**" है इस लिए यह भी बशारत मुहम्मदी है !

अलावा-बरें इसी तरह पहले सलातीन के बीस बाब की छठी आयत में चीज़ें हैं चुनांचे लिखा है "लेकिन अब में कल उसी वक़्त अपने खादिमों को तेरे पास भेजूंगा सो वो तेरे घर और तेरे खादिमों के घरों की तलाशी लेंगे और जो कुछ तेरी निगाह में नफ़ीस (**महमदीम**) होगा वो उसे अपने क़बज़ा में करके ले आएंगे । "पूरी इबारात से साफ़ ज़ाहिर है कि यहां इराम के बादशाह बनहदद का ज़िक्र है जिसने शाह इस्राइल के पास कासिद भेज कर धमकी दी कि वो इस्राइल के घरों की तमाम चीज़ें जो उनकी निगाह में नफ़ीस हैं लूट ले जाएगा अब हम पूछते हैं कि एक लम्हा के लिए भी यह दलील पेश की जा सकती है कि चूँकि यहां इब्रानी लफ़ज़ **महमदीम** आया है इस लिए यह बशारत मुहम्मदी है ? इबारात के सिलसिला के इलावा जिससे मतलब साफ़ ज़ाहिर होता है किया तवारीख से कहीं भी इस बात का पता लगता है कि किसी ग़ैर मुल्की बादशाह ने हज़रत मुहम्मद साहिब को कैद किया और उन को बतौर असीर ग़ैर मुल्क में ले गया ? गरज़ कि मुसलमान मुसन्निफ़ की सब बातें मुहमल हैं और उन से सिर्फ़ यह ज़ाहिर होता है कि जो लोग बग़ैर इब्रानी का इल्म हासिल किए चंद इब्रानी अल्फ़ाज़ के माअनों के ज़रीया से दलील निकालने की जुरात करते हैं वो अपने इल्मी इफ़लास का सबूत देते हैं । हकीकत तो यह है कि यह सारी दलील ही तिफ़लाना है और काबिल-ए-तवज्जा नहीं । अगर लफ़ज़ **महमदीम** और लफ़ज़ मुहम्मद में मुशाबहत होने के सबब से हज़रत मुहम्मद साहिब के लिए बशारत समझी जाती है तो फिर कुरआन में हिंदू राम अवतार के लिए बशारत मौजूद होने की दलील क्यों ना पेश करें क्योंकि कुरआन में लफ़ज़ रुम आया है।

## (5) यासयाह बाब 21 आयत 7

यह बड़े अफ़सोस की बात है कि मुसलमान लोग अक्सर हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत की तलाश के शौक में किताब मुक़द्दस के मुक़ामात की अजीब व बेमानी तावील करते हैं । अगर पाक किताब में कहीं उनको लफ़ज़ "तलवार" मिल जाता है तो बस फिर किया है ? हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत का एक गुल मच जाता है इसी तरह अगर लफ़ज़ ऊंट उनको कहीं नज़र पड़ जाता

है तो इस पर भी कहने लगते हैं कि आखिरश एक अरबी शरीयत देने वाले की सरीह पेशनगोई मिल गई। यासायाह नबी के 21 बाब 7 आयत की जो तावील मुसलमानों ने की है उसे देख कर हम ने यह बातें लिखी हैं और जिस ग़लती की हमने शिकायत की है इस की यह तावील एक उम्दा नज़ीर है। चुनांचे वहां मर्कूम है:-

"उसने सवार देखे जो दो-दो आते थे और गधों पर और ऊंटों पर सवार और इस ने बड़े गौर से सुना।" यह सुनकर ताज्जुब होता है कि चंद मुसलमान मुसन्निफ़ों को इस में भी बशारत मुहम्मदी मालूम हुई है और हम को बताया जाता है कि गधों पर सवार से हज़रत ईसा मुराद हैं क्योंकि वो एक मर्तबा गधे पर सवार हो कर यरूशलेम में दाखिल हुए और इस से भी अजीबतर बात यह है कि ऊंटों पर सवार से हज़रत मुहम्मद साहिब मुराद हैं क्योंकि आप अक्सर ऊंट की सवारी किया करते थे। गोया कोई और सिवाए हज़रत मुहम्मद साहिब ऊंट पर सवार ही नहीं हुआ और ना मसीह के सिवा और कोई गधे पर सवार हो कर कभी यरूशलेम में दाखिल हुआ ?

## **किताब-ए- मुक़द्दस की इस इबारत में बाबुल की बर्बादी की पेशनगोई है**

अह्देअतीक और जदीद में हज़रत मुहम्मद साहिब की निस्बत पेशनगोई के पता लगाने की बहुतेरी कोशिशें हमने देखी हैं मगर यह सबसे बढ़कर मज़हकाखेज़ है। इस में तो ज़रा भी अक्ल से काम नहीं लिया गया क्योंकि इस तमाम इबारत में अरबी नबी की तरफ़ इशारा तक भी पाया नहीं जाता। इस बात को गौर से पढ़ने से मालूम होगा कि इस में बाबुल की आने वाली तबाही की पेशनगोई है और जब सौ बरस बाद दाराए फ़ारस ने इस पर क़बज़ा किया तो यह नबुव्वत पूरी हुई। अगर मुसन्निफ़ मौसूफ़ इस बाब की 9 वीं आयत को पढ़ लेते तो जो उन्होंने लिखा है इस के वो हरगिज़ मजाज़ ना थे क्योंकि वहां साफ़ तौर से बाबुल का ज़िक्र आया है चुनांचे लिखा है "और देख सिपाहीयों के गोल और उन के सवार दो दो करके आते हैं फिर उसने यूँ कहा कि बाबुल गिर पड़ा गिर पड़ा।" ऐसे ऐसे मुक़ामात से मुसलमानों को नबुव्वत ढूँढ कर निकालते देखकर यह ख़याल होता है कि उनको अपने नबी के लिए बशारत की बड़ी कमी महसूस हो रही है।

### **(6) यासायाह 42 बाब 1 आयत**

यासायाह का 42 वां बाब भी अक्सर हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत की दलील में पेश किया जाता है। पहली आयत में लिखा है:-

"देखो मेरा खादिम जिसको मैं सँभालता हूँ । मेरा बर्गुजीदा जिससे मेरा दिल खुश है। मैंने अपनी रूह इस पर डाली । वो क्रौमों---में अदालत जारी करेगा।

## इंजील में ये इबारत सय्यदना ईसा मसीह के लिए बताई गई है

हम इस इबारत-ए-मज़क़रा की ज़्यादा तशरीह करके नाज़रीन का वक़्त ज़ाए ना करेंगे इतना ही बता देना काफ़ी है कि यह बशारत सफ़ाई के साथ इंजील में सय्यदना ईसा मसीह में पूरी होती हुई ज़ाहिर की गई है और चूँकि खुदा ने अपने कलाम की खुद तशरीह कर दी है इस लिए उस के मुताल्लिक इन्सानी तसव्वुरात लेकर ज़्यादा बहस करना फ़ुज़ूल है इंजील की इबारत मज़क़रा जिससे यासायाह की इस नबुव्वत की तशरीह होती है वो यह है :-

"और उसने (सय्यदना ईसा ने )उनको ताकीद की कि मुझे ज़ाहिर ना करना ताकि जो यासायाह नबी की मारफ़त कहा गया था वो पूरा हो की देखो यह मेरा खादिम है जिसे मैंने चुना । मेरा प्यारा जिससे मेरा दिल खुश है । मैं अपना रूह इस पर डालूँगा और वो ग़ैर क्रौमों को इन्साफ़ की खबर देगा।"

## यासायाह 42 वां बाब 11 वीं आयत

अक्सर अवकात मुसलमान मज़क़रा बाला बातों की तस्दीक करते हुए कहते हैं कि यासायाह नबी के बयालिसवे बाब के दूसरे हिस्सा में एक और शख्स की सरीह बशारत मौजूद है और वो हज़रत मुहम्मद साहिब हैं । खासकर वो इस बाब की ग्याहरवीं आयत पेश करते हैं जिसमें लिखा है :-

"बियाबान और इस की बस्तीयां केदार के आबाद गांव अपनी आवाज़ बुलंद करें। सेलाह के बसने वाले गीत गाएँ। पहाड़ों की चोटियों पर से ललकारें।"

मुसलमानों का दाअवा है कि इस आयत में लफ़ज़ केदार से सरीहन अरब के लोग मुराद हैं और इस लिए इस में मुहम्मद साहिब की बशारत पाई जाती है।

## इस इबारत में मसीह की सल्तनत को फैलाने का बयान है

मज़क़रा बाला इस्लामी तावील के जवाब में हम कहते हैं कि इस में हज़रत मुहम्मद साहिब का

बयान बिलकुल नहीं है बल्कि मसीह की सल्तनत की वुसअत के तज़क़िरा में यह बताया गया है कि खुदा की मर्ज़ी है कि एक रोज़ अहले केदार भी इस सल्तनत की खुशी में शरीक हों यह तो सबको मालूम है कि हज़रत मुहम्मद साहिब क़बीला केदार में से नहीं बल्कि क़बीला कुरैश से थे और इस लिए इस आयत में हज़रत मुहम्मद साहिब की तरफ़ कोई इशारा नहीं है । अलावा बरीं दसवीं आयत में लिखा है "खुदावंद के लिए एक गीत गाओ" लेकिन इस्लामी इबारत में गाना बिलकुल मना है इस लिए इबारत ज़ेर-ए-बहस से इस्लाम मुराद नहीं हो सकता हज़रत मुहम्मद साहिब का एक मशहूर क़ौल यह है कि " **الغنايبت النفاق في القلب كبايبت الباء الذرع** " यानी गीत गाना इसी तरह दिल में निफ़ाक़ पैदा करता है जिस तरह पानी ज़िराअत पैदा करता है। फिर यह बात कैसे मान ली जाये कि एक ऐसी बशारत जिसमें लोगों के अपने मुंजी के लिए गाकर खुश होने का ज़िक़्र है बशारत मुहम्मदी है ?

## (7) हबक्कूक़ 3 बाब 3 आयत

अहदेअतीक़ का एक और मुक़ाम जो हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत की दलील में मुसलमान पेश करते हैं वह हबक्कूक़ नबी की किताब के तीसरे बाब की तीसरी आयत है जिसमें यूं लिखा है:-

"खुदा तीमान से आया और कुददूस कोह-ए-फ़ारान से ।"

तीमान मक्का से जहां हज़रत मुहम्मद साहिब पैदा हुए थे पाँच सौ मील के फ़ासिला पर है जिन्होंने किताब मुक़ददूस के क़दीम जुगराफ़िया का मुताअला किया है उनको मालूम है तीमान फ़ारान के करीब था और हम देख चुके हैं कि यह आखिरुलज़िक़्र मुक़ाम मक्का से शुमाली जानिब को 500 मील के फ़ासले पर था और तीमान हकीक़त में अदोमीयों के मुल्क का एक हिस्सा था और यह इस आयत से साफ़ ज़ाहिर है "अदोम की बाबत रब-उल-अफ़फ़वाज यूं फ़रमाता है कि क्या तीमान में ख़िरद मुतालिक़्र ना रही" (यिर्मियाह 49 बाब 7 आयत) और फिर मर्कूम है "इस लिए खुदावंद खुदा यूं फ़रमाता है कि मैं अदोम पर हाथ चलाऊंगा । इस के इन्सान और हैवान को नाबूद करूंगा और तीमान से लेकर उसे वीरान करूंगा । (हज़क़ीएल 25 बाब 13) इन हवालों से तीमान का मौक़ा साफ़ ज़ाहिर है जो बहीरा मुर्दार से कई मील के फ़ासिला पर ना होगा । इस में हज़रत मुहम्मद साहिब का कोई भी ज़िक़्र नहीं है अब रहा इन अल्फ़ाज़ के मुताल्लिक़्र कि "कुददूस कोह फ़ारान से (आया) "सौ पेशतर दिखा चुके हैं कि हज़रत मुहम्मद साहिब का ताल्लुक़ फ़ारान से इतना ही था जितना कि हिन्दुस्तान से क्योंकि यह जगह मक्का से कम अज़ कम पाँच सौ मील दूर थी और ग़ालिबन हज़रत मुहम्मद साहिब को इस की ख़बर तक ना थी ।

## इस आयत में इलाही वजूद का बयान है

अगर हम बड़े गौर से इस आयत ज़ेर-ए-बहस का मुताअला करें और सिलसिला की आयतों को मिला कर पढ़ें तो मालूम हो जाएगा कि इस में किसी इन्सानी ज़ात का बयान नहीं है बल्कि खुद खुदा का जिक्र है। यह खुदा था जो तीमान से आया और वो कुद्दूस जो कोह-ए-फ़ारान से आया। कुरआन और हदीसों में बहुत से मुकामात हैं जो हज़रत मुहम्मद साहिब की बेगुनाही के बरखिलाफ़ गवाही देते हैं पस हबक्कूक नबी के सहीफ़े की आयत मज़कूरा का बयान मुहम्मद साहिब के लिए हरगिज़ नहीं हो सकता। और ना हज़रत मुहम्मद साहिब की निस्बत यह कहा जा सकता है कि "इस की शौकत से आसमान छिप गया या यह कि इस की कदीम राहें हैं" (16 वीं आयत) गरज़ कि सारी इबारत का मौजू खुदा है और इस आयत को हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत बताना सख्त तास्सुब पर मबनी है।

## (8) मरकुस की इंजील का पहला बाब और सातवीं आयत

मुसलमान ना सिर्फ़ अहदेअतीक में हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारतों के होने का दाअवा करते हैं बल्कि वो इसी तरह अहदेजदीद में भी बताते हैं कि हज़रत मुहम्मद साहिब के हक़ में पेशनगोई सफ़ाई से दर्ज है। अब हम इंजील के चंद ख़ास ऐसे मुकामात पर गौर करेंगे पहली पेशिनगोई जिस का हम मुताअला करेंगे मरकुस की इंजील के पहले बाब की सातवीं आयत में बताई जाती है जहां लिखा है :-

"मेरे बाद वो शख्स आने वाला है जो मुझसे ज़ोर-आवर है। मैं इस लायक नहीं कि झुक कर उस की जूतियों का तस्मा खोलूं।"

मुसलमान कहते हैं कि यह उन अल्फ़ाज़ के ज़रीया से हज़रत ईसा ने साफ़ लफ़्ज़ों में सबसे आखिरी नबी आज़म मुहम्मद साहिब के आने की बशारत दी है।

**यह अल्फ़ाज़ युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के हैं जिसने  
मसीह के हक़ में गवाही दी**

चंद मुसलमान मुसन्निफ़ों के दाआवा मज़कूरा की इस चालबाज़ी की नज़ीर मिलना निहायत मुश्किल है क्योंकि यह तो एक लम्हा के लिए भी तस्लीम करना मुहाल है कि जिन मुसन्निफ़ों ने आयत मज़कूरा को हज़रत मुहम्मद साहिब के लिए बताया है उन्होंने इस मुक़ाम की पूरी इबारत को नहीं पढ़ा होगा उनको अपने मुसलमान नाज़रीन की लाइल्मी का पूरा यक़ीन है जिससे वो फ़ायदा उठा कर उनको यह यक़ीन दिलाना चाहते हैं कि इस आयत के अल्फ़ाज़ मज़कूरा का काइल मसीह है और मुराद इस से हज़रत मुहम्मद साहिब हैं । क्योंकि असल इबारत से साफ़ ज़ाहिर है कि यह अल्फ़ाज़ हज़रत ईसा के नहीं बल्कि उनका काइल युहन्ना बपतिस्मा देने वाला है यानी यहया नबी है। चुनांचे चौथी और छटी आयतों में यूं मर्कूम है "युहन्ना आया और बियाबान में बपतिस्मा देता और गुनाहों की माफ़ी के लिए तौबा के बपतिस्मा की मुनादी करता था और युहन्ना ऊंट के बालों का लिबास पहने और चमड़े का पटका अपनी कमर से बाँधे रहता और टिड्डियां और जंगली शहद खाता था और यह मुनादी करता था कि मेरे बाद वो शख्स आने वाला है जो मुझसे ज़ोरावर है मैं इस लायक नहीं कि झुक कर उस की जूतियों का तस्मा खोलूं।"

अलावा-बरें युहन्ना ने यह गवाही हज़रत मुहम्मद साहिब के लिए नहीं दी जो छः सौ बरस बाद हुए बल्कि मसीह के हक़ में जो इन के दर्मियान ज़िंदा मौजूद थे । चुनांचे दूसरे मुक़ाम में यूं लिखा है "युहन्ना ने जवाब में उनसे कहा कि मैं पानी से बपतिस्मा देता हूँ । तुम्हारे दर्मियान एक शख्स खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते यानी मेरे बाद का आने वाला जिसकी जूती का तस्मा मैं खोलने के लायक नहीं" (युहन्ना 1 बाब 26 , 27)

अब इस इबारत मर्कूमा से शक की गुंजाइश नहीं रहती । आयत ज़ेर-ए-बहस के अल्फ़ाज़ कहने वाला युहन्ना बपतिस्मा देने वाला है और इस ने सय्यदना ईसा मसीह के लिए इन अल्फ़ाज़ को इस्तिमाल किया और किसी सूरत में भी हज़रत मुहम्मद साहिब की तरफ़ इस में इशारा नहीं पाया जाता और मुसलमान मुसन्निफ़ से अगर यह दरयाफ़्त किया जाये कि हज़रत मुहम्मद साहिब ने रूहुल-कुददुस से लोगों को क्योंकर बपतिस्मा दिया तो उसे जवाब देना निहायत मुश्किल होगा ।

## (9) युहन्ना 1 बाब आयत 19 से 21 तक

एक और मुक़ाम जो अहले इस्लाम हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत की दलील में पेश करते हैं वो युहन्ना रसूल की इंजील के पहले बाब की 19 वीं आयत से 21 वीं आयत तक है चुनांचे वहां लिखा है :-

"और युहन्ना की गवाही यह है कि जब यहूदियों ने यरूशलेम से काहिन और लावी यह पूछने को इस के पास भेजे कि तू कौन है ? तो उसने इकरार किया और इन्कार ना किया बल्कि इकरार किया

कि मैं तो मसीह नहीं हूँ उन्होंने इस से पूछा फिर कौन है? क्या तू एलियाह है उसने कहा मैं नहीं हूँ किया तू वह नबी है ? इस ने जवाब दिया कि नहीं।"

मुसलमान आम तौर पर इस की तशरीह यूँ करते हैं कि यहां तीन नबियों का ज़िक्र है यानी मसीह , एलियाह और एक तीसरा गैर-मारूफ़ नबी जिसके लिए "वह नबी" किया गया है और बड़े वसूक के साथ वो बताते हैं कि इस से मुराद नबी आखिर-ऊज़-ज़मा हज़रत मुहम्मद हैं। वो कहते हैं कि यहूदी मसीह के इलावा एक और बड़े नबी के मुंतज़िर थे और जब युहन्ना ने इन्कार किया कि ना मैं मसीह हूँ और एलियाह तो उन्होंने ने यह नतीजा निकाला कि यह ज़रूर वह नबी होगा दूसरे लफ़्ज़ों में वो हज़रत मुहम्मद के मुंतज़िर थे (बाइबले मुहम्मद सफ़ा 28-32)

बदकिस्मती से जी फ़हम लोगों को इस तावील मज़कूरा के क़बूल करने में चंद मुश्किलात पेश आती हैं । अक्वल तो यह ग़लत है कि यहूदी किसी ऐसे नबी के मुंतज़िर थे जो मसीह के बाद आएगा और ना उस एतिक़ाद का किताब मुक़द्दस में कहीं नामोनिशान है।

## यहूदी मसीह के एक पशिरू के मुंतज़िर थे उनको उस के किसी जानशीन का इंतज़ार ना था

अलावा-बरें यह बयान कि वो मसीह के बाद किसी नबी के मुंतज़िर थे इस सवाल के खिलाफ़ है जो उन्होंने ने युहन्ना से किया क्योंकि यह याद रखना चाहिए कि युहन्ना से सवाल करने वालों की राय में मसीह खुद उस वक़्त तक नहीं आया था इस लिए यहूदीयों का युहन्ना से यह पूछना कि क्या तू वह नबी है जो मसीह के बाद आने वाला है बड़ी बेवकूफी है। यह सही है कि यहूदी मसीह की आमद से पेशतर नबियों का इंतज़ार कर रहे थे बहुत से लोग यह नहीं समझते थे कि इस्तसना के अठारहवें बाब में जिस नबी की बशारत है इस से खुद मसीह मुराद है। बल्कि उनका ख़याल यह था कि युहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मानिंद वो भी मसीह के नक़ीबों में से कोई है चुनांचे यह बात इंजील के इस बयान से साफ़ ज़ाहिर है " पस भीड़ में से बाअज़ ने यह बातें सुनकर कहा बेशक वह नबी है औरों ने कहा यह मसीह है" (युहन्ना 7 बाब 40)

गरज़ कि यहूदीयों के पेशेनज़र जो सवाल था वो यह था कि युहन्ना मसीह है या मसीह के नक़ीबों में से एक नक़ीब । मसीह के बाद किसी नबी के आने का सवाल उस वक़्त तक नहीं उठ सकता जब तक मसीह खुद ना आ जाए। एक दूसरे मुक़ाम से पता लगता है कि बाज़ों का ख़याल था कि यर्मियाह या कोई और नबी मसीह के पेशरू की हैसियत से फिर ज़ाहिर होगा चुनांचे लिखा है



"जब येशु केसरिया फिलिप्पी के इलाके में आया । तो उसने अपने शागिर्दों से ये पूछा कि लोग इब्न-ए-आदम को क्या कहते हैं ? उन्होंने कहा बाअज़ यहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं । बाअज़ एलयाह यिर्मियाह या नबियों में से कोई" (मती 16 बाब 13, 14)

इन तमाम बातों से साफ़ ज़ाहिर है कि इस सारे मसले पर यहूदीयों का ख़याल किस क़दर ग़ैर वाज़ेह और ग़ैर क़ाबिल-ए-एतबार था और इस लिए यह बात मदद-ए-नज़र रखकर कि इन्ही यहूदीयों ने येशु को ना पहचाना और उसे मसीह तस्लीम करना तो दरकिनार ख़ुदा का नबी भी इस को नहीं माना बल्कि उस का इन्कार किया और आखिरकार उसे मार डाला कोई ताज्जुब नहीं कि उन्होंने सहीफ़े समझने में ग़लती की और यह भी समझे कि वह नबी जिसकी बशारत मूसा ने दी वो मसीह के सिवा कोई और है ।

किताब मुक़द्दस से पता लगता है कि बाअज़ यहूदी ज़्यादा साफ़-दिल थे और बाद में जब उन्होंने सय्यदना मसीह के मोज़े देखे तो उनको मजबूरन अपनी ग़लती का एतराफ़ करना पड़ा और उन को मानना पड़ा कि "वह नबी" यही है । चुनांचे लिखा है कि :-

"पस जो मोज़िज़ा उसने दिखाया वो लोग उसे देखकर कहने लगे जो नबी दुनिया में आने वाला था फ़िल-हक़ीक़त यही है" (युहन्ना 6 बाब 14)

## **मसीह और वह नबी से एक ही शख्स मुराद है ।**

अगर इस बात के सबूत की और ज़रूरत है कि मसीह और वह नबी से एक ही शख्स मुराद है तो यह पतरस रसूल के इन अल्फ़ाज़ से बिलकुल वाज़ेह है जो इस ने ख़ुदा की तरफ़ से कहे और जिन से उसने उनका एक ही शख्स के लिए होना ज़ाहिर किया और वो अल्फ़ाज़ ये हैं :-

"चुनांचे मूसा ने कहा कि ख़ुदावंद ख़ुदा तुम्हारे भाईयों में से तुम्हारे लिए मुझसा एक नबी पैदा करेगा। जो कुछ वो तुमसे कहे उस की सुनना और यूं होगा कि जो शख्स इस नबी की ना सुनेगा वो उम्मत में से नेस्त व नाबूद कर दिया जाएगा । बल्कि सामूएल से लेकर पिछलों तक जितने नबियों ने कलाम किया इन सबने इन दिनों की ख़बरदी है.....ख़ुदा ने अपने ख़ादिम को उठाकर पहले तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम में से हर एक को इस की बदियों से हटा कर बरकत दे"  
(आमाल 3 बाब 32 आयत से 36)

अब इन मज़क़ूरा बाला बातों से साफ़ ज़ाहिर है कि मसीह के ज़माने के यहूदीयों की तरह आजकल के मुसलमान भी मसीह और मूसा की बशारत के इस नबी से दो मुख्तलिफ़ अशखास मुराद लेकर बड़ी

ग़लती पर हैं। पाक सहीफ़ों से साफ़ ज़ाहिर है कि उनसे एक ही शख्स की ज़ात मुराद है। इस लिए यह इखतिरा कि इस में हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत है बिलकुल लायानी है।

## (10) युहन्ना का 14, 15, और 16 बाब

अब हम किताब मुकद्दस की उन इबारतों पर पहुंचे हैं जो पैरोवाने इस्लाम बहुत ही ज़्यादा हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत की सनद में पेश करते हैं। हमारी मुराद युहन्ना 14, 15, 16 बाब की इन आयतों से है जिनमें "पारक़लीत" का लफ़ज़ आया है जिसका तर्जुमा तसल्ली देने वाला है। वकील और मददगार है। जो आयतें मुसलमान हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत में पेश करते हैं वो हस्ब-ए-ज़ैल हैं:-

"और मैं बाप से दरखास्त करूंगा तो वो तुम्हें दूसरा मददगार बख़शेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे यानी रूह-ए-हक़ जिसे दुनिया हासिल नहीं कर सकती क्योंकि ना उसे देखती है और ना जानती है। तुम उसे जानते हो क्योंकि वो तुम्हारे साथ रहता है और तुम्हारे अन्दर होगा" (युहन्ना 14 बाब आयत 16 से 17) लेकिन मददगार यानी रूहुल-कुददुस जिसे बाप मेरे नाम से भेजगा वही तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वह सब तुम्हें याद दिलाएगा (युहन्ना बाब 14 आयत 26) "लेकिन जब वो मददगार आएगा जिसको मैं तुम्हारे पास बाप की तरफ़ से भेजूंगा यानी रूह-ए-हक़ जो बाप से सादिर होता है तो वो मेरी गवाही देगा"

(युहन्ना 15 बाब आयत 26)" लेकिन जब वो यानी रूह हक़ आएगा तो तुमको तमाम सच्चाई की राह दिखाईगा। इस लिए कि वो अपनी तरफ़ से ना कहेगा लेकिन जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और तुम्हें आइन्दा की ख़बरें देगा" (युहन्ना 16 बाब आयत 13)

इंजील की मज़क़ूरा बाला आयतें मुसलमान मुसन्निफ़ों के बयान के मुताबिक़ पैगंबर आखिरुज्जमा नबी आज़म हज़रत मुहम्मद साहिब के लिए बशारतें हैं जो ख़ुदा के अर्श के हुज़ूर लोगों के लिए शफ़ाअत करने के सबब से तसल्ली देने वाला या सुलह कराने वाला हो गया है। सिर्फ़ उन्ही की ज़ात में सय्यदना मसीह की यह बशारतें पूरी होती हैं और उनका नाम यूनानी लफ़ज़ पाराक़लितास से मिलता-जुलता है।

यह दाअवा बार-बार ऐसे ज़ोर से पेश किया गया है कि बाअज़ कम फ़हम लोगों ने यकीन कर लिया है कि इस दाअवा की बुनियाद वाक़ई पाक नविशतों की तहरीर है। इस सवाल पर हम दीगर आयात से ज़्यादा तफ़सील के साथ गौर करेंगे। "बाइबले मुहम्मद" का मुसन्निफ़ यह हुज्जत पेश करता है कि युहन्ना के इन मुक़ामात की मसीही तफ़सीर अगर दरुस्त है और अगर वाक़ई मसीही कलीसिया की तालीम के लिए रूहे पाक दी गई है तो मसीहीयों में फिर जंग का नाम तक ना होता और उन में

फ़िरकाबंदी ना पाई जाती और फिर बिला किसी शक़ व शुबहा के यह मुसन्निफ़ बताता है कि यह पाराक़लीत माअहूद खुद मुहम्मद साहिब ही हैं। लेकिन अब वो नहीं बताता कि फिर मुसलमान आपस में क्यों जंग करते हैं और शीया और सुन्नी आपस में एक दूसरे पर क्यों तबर्रा कहते और लानत भेजते हैं ? अगर इस मुसन्निफ़ के बयान के मुताबिक़ पाराक़लीत माअहूद का यह मन्सब है कि इन बातों से अपने लोगों को बचाए तो आँहज़रत क्यों इस में नाकामयाब रहे ? और खुद उन्होंने क्यों पेशनगोई की कि इस्लाम में तिहतर फ़िरक़े हो जाएंगे जिनमें एक के सिवा तमाम दोज़खी होंगे। इस का जवाब सिर्फ़ यही है कि मोअतरिज़ की दलील बिलकुल ग़लत है ।

खुदा ने ज़बरदस्ती लोगों को एक ही अक़ीदे पर रखने का वाअदा नहीं किया और ना उसने यह कहा है कि मेरी रूह मसीही कलीसिया के नाम निहाद मसीहीयों की खाहिशात को दूर कर देगी सवाल वाकई यह है कि क्या मज़क़ूरा बाला आयतों की सही और रास्त तावील करने से हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत उनमें पाई जाती है या नहीं और अब हम इस सवाल के जवाब की तरफ़ रुजू करते हैं ।

## (1) पाराक़लीत इलाही रूह है

पहली बात जो हम दिखाना चाहते हैं इस में तावील की कोई ज़रूरत नहीं सिर्फ़ आयत को पढ़ने से ही ये मतलब साफ़ हो जाता है । चुनांचे लिखा है कि यह पाराक़लीते माअहूद "रूह-ए-हक़" (युहन्ना 14 बाब 17) और "रूहुल-कुददुस" (युहन्ना 14 बाब 26 आयत) है।

अब इन अल्फ़ाज़ से साफ़ ज़ाहिर है कि जिसका वाअदा किया गया है वो कोई बशर नहीं बल्कि इलाही रूह है और हज़रत मुहम्मद साहिब ने कभी इलाही रूह होने का दाअवा नहीं किया बल्कि वो अपनी इन्सानियत का हमेशा बार-बार एतराफ़ करते रहे चुनांचे इस किस्म का फ़िक़रा अक्सर कुरआन में मिलता है **هل كنت الا بشر** यानी मैं कौन हूँ मगर एक इन्सान।

## (2) पाराक़लीत अबद तक रहेगा

इन अल्फ़ाज़ से यह बात और भी तक्वियत पाती है कि यह पाराक़लीत जिसका वाअदा है इन्सान से कहीं अफ़ज़ल है "वो तुम्हें दूसरा मददगार बख़शेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे" (युहन्ना 14 बाब 16)

अब सवाल यह है कि यह बात हज़रत मुहम्मद साहिब के लिए क्योंकर सच्ची हो सकती है जो

मदीना में मदफून हैं। क्या हज़रत मुहम्मद साहिब ने उहद के मैदान में अपने लोगों को यह कह कर तंबीह नहीं की :-

**وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ** यानी मुहम्मद तो एक रसूल है। हो चुके इस से पहले बहुत से रसूल तो फिर क्या अगर वो मर गया या मारा गया तो उल्टे पांव फिर जाओगे ? (आल-ए-इमरान आयत 144)

### (3) पाराक़लीत दिखाई नहीं देगा

अब एक और बात इस रूह माअहूद के मुताल्लिक यह है कि वो लोगों की आँखों से निहां होगा चुनांचे लिखा है कि वो एक रूह है " जिसे दुनिया हासिल नहीं कर सकती । क्योंकि ना उसे देखती और जानती है" (युहन्ना 14 बाब 17) इस किस्म के अल्फ़ाज़ हज़रत मुहम्मद साहिब के लिए इस्तिमाल नहीं हो सकते और ना ही किसी इन्सान की निस्बत यह बातें कही जा सकती हैं। यह सिर्फ़ इस रूह-ए-इलाही पर है सादिक आती हैं जिसके मुताल्लिक कलाम-ए-इलाही सिखाता है कि सय्यदना ईसा मसीह के वाअदा के मुताबिक़ वो भेजा गया।

### (4) पाराक़लीत लोगों के दिलों में सुकूनत करेगा

फिर यूं मर्कूम है कि पाराक़लीत रुहानी तौर से लोगों के दिलों में रहेगा। चुनांचे लिखा है कि :-  
"वो तुम्हारे साथ रहता है और तुम्हारे अन्दर होगा" (युहन्ना 14 बाब 17)  
अब यह बताने की कोई ज़रूरत नहीं कि मैं किस्म के अल्फ़ाज़ हज़रत मुहम्मद साहिब के लिए इस्तिमाल करना बिलकुल ग़ैर-मुमकिन है।

### (5) पाराक़लीत मसीह के रसूलों के ज़माना-ए-हयात में नाज़िल हुआ

आमाल की किताब के पहले बाब की चौथी और पांचवी आयतों में लिखा है कि पाराक़लीत माअहूद छः सौ बरस बाद दूर मुल्क अरबिस्तान में नहीं बल्कि ख़ुद उन्ही शागिर्दों पर जिनसे वाअदा किया गया था। थोड़े दिनों के बाद यरूशलेम में नाज़िल होगा। "चुनांचे लिखा है" :-

उनसे मिलकर उनको हुक्म दिया कि यरूशलेम से बाहर ना जाओ बल्कि बाप के इस वाअदा के पूरा होने के मुंतज़िर रहो जिसका ज़िक्र तुम मुझसे सन चुके हो क्योंकि युहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया। मगर तुम थोड़े दिनों के बाद रूहुल-कुददुस से बपतिस्मा पाओगे।

इस से साफ़ ज़ाहिर है कि शागिर्दों को मसीह के वाअदा के पूरा होने का इंतज़ार करना था और इस के पूरा होने के बाद ही वो तमाम दुनिया में इंजील की मुनादी के बड़े हुक्म की तामील कर सकते थे। यह भी लिखा है कि सय्यदना मसीह ने दुनिया छोड़ने से पेशतर शागिर्दों को इकट्ठे करके कहा। "देखो जिसका मेरे बाप ने वाअदा किया है मैं इस को तुम पर नाज़िल करूंगा लेकिन जब तक आलम-ए-बाला पर से तुमको कुव्वत का लिबास ना मिले इस शहर में ठहरे रहो" (लूका 24 बाब 49) मसीह के इन अल्फ़ाज़ से साफ़ ज़ाहिर है कि पाराकलीत उनके ज़माना हयात में नाज़िल होने को था जिनसे मसीह मुखातब हुआ और यह सबसे पहले यरूशलेम में हुआ। इंजील के अल्फ़ाज़ से यह बिलकुल वाज़ेह है और सिर्फ़ वही जिनको तास्सुब ने अंधा कर रखा है यह कह सकते हैं कि उनमें हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत है।

## (6) पाराकलीत आइन्दा की खबरें देगा

युहन्ना की इंजील के 16 बाब की 13 आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि सय्यदना ईसा मसीह ने अपने शागिर्दों को बताया कि वो रूह-ए-माअहूद "तुम को आइन्दा की खबरें देगा" लेकिन हर शख्स जो कुरआन से वाकिफ़ है जानता है कि हज़रत मुहम्मद साहिब आइन्दा की बातों से बिलकुल बे-खबर थे। चुनांचे सुरह अल-अहकाफ की दसवीं आयत में लिखा है :-

وَمَا أَدْرِى مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ

यानी मैं यह नहीं जानता कि क्या किया जाएगा मेरे और तुम्हारे साथ ।

फिर सुरह अलअनआम की 50 आयत में है :-

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبِ

यानी मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास खज़ाने हैं अल्लाह के और ना यह कि मैं जानता हूँ छिपी हुई बातें।

अब इस रूह का बयान जो मसीही कलीसिया की तालीम के लिए बखशा गया था कैसा मुख्तलिफ़ है इस रूह की बाबत हम पढ़ते हैं कि पौलुस रसूल इफ़सस की कलीसिया के बुजुर्गों से खिताब करके कहता है :-

"रूहुल-कुददुस" हर शहर में गवाही दे दे कर मुझसे कहता है कि कैद और मुसीबतों मेरे लिए तैयार हैं।"

फिर दूसरे मुक़ाम पर लिखा है "अगबस नाम एक नबी यहूदया से आया इस ने हमारे पास आकर पौलुस का कमरबंद लिया और अपने हाथ पांव बांध कर कहा कि रूहुल-कुददुस यूं फ़रमाता है कि जिस शख्स का यह कमरबंद है इस को यहूदी यरूशलेम में इसी तरह बाँधेंगे और ग़ैर क़ौमों के हाथ में हवाले करेंगे " (आमाल 21 बाब 10, 11)

यह पेशनगोइयाँ चंद दिनों बाद हर्फ़ बहरफ़ पूरी हुईं और यूं सफ़ाई से ज़ाहिर किया कि सय्यदना ईसा मसीह ने जिस "रूह" का वाअदा अपने शागिर्दों से किया था नाज़िल हुआ और वाअदा के मुताबिक़ उसने आने वाली बातों की ख़बर दी ।

## (7) पाराक़लीत के आने का वाक़िया आमाल के दूसरे बाब में मर्कूम है

आमाल के दूसरे बाब में हम पढ़ते हैं कि मसीह के वाअदा के मुताबिक़ रूहुल-कुददुस के नुज़ूल का वाक़िया वहां मर्कूम है । हम देख चुके हैं कि ख़ास मसीह के शागिर्दों पर रूह का नुज़ूल होने को था और फिर आमाल के पहले बाब में लिखा है कि रूह पाक की यह आमद बड़ी ताक़त और कुदरत के साथ होने को थी। मसीह ही ने उनसे कहा था :-

"जब रूहुल-कुददुस तुम पर नाज़िल होगा तो तुम कुव्वत पाओगे" (8 आयत)

इस पेशनगोई के मुताबिक़ चंद दिनों के बाद जब शागिर्द एक ख़ास मुक़ाम पर जमा थे तो यकायक "सब रूहुल-कुददुस से भर गए और ग़ैर ज़बानें बोलने लगे जिस तरह रूह ने उन्हें बोलने की ताक़त बखशी" (आमाल 2 बाब 4) और यूं यह बड़ा वाअदा पूरा हुआ और शागिर्द इस नई ताक़त से मामूर हो कर हर जगह ज़िंदगी के कलाम की मुनादी करने को निकले और "हर शख्स पर ख़ौफ़ छा गया और बहुत से अजीब काम और निशान रसूलों के ज़रीये से ज़ाहिर होते थे" (आमाल 2 बाब 43)

पस अयाँ है कि यह था रूहुल-कुददुस का वाअदा जिसे युहन्ना ने ज़ाहिर किया और यूं यह वाअदा

पूरा हुआ जिसे लूका ने तहरीर किया । अब नाज़रीन खुद ही फैसला कर लें कि इस पेशनगोई को हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत बताना जो जिस्म और खून में एक इन्सान थे और जिन को हज़ारों ने देखा और जो मुल्क अरब में वक्त माअहूद से छः सौ बरस बाद पैदा हुए बिलकुल नामुम्किन है।

## (8) युहन्ना चौदह बाब 30 आयत

इस रिसाला को खत्म करने से पेशतर एक और बशारत पर हम गौर करेंगे । यह युहन्ना के चौदह बाब की 30 वीं आयत में है जहां पर लिखा है :-

"दुनिया का सरदार आता है और मुझ में इस का कुछ नहीं"

बहोतेरे मुसलमान मुसन्निफ़ों ने यह हवाला हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत में पेश किया है। किसी ने किया ख़ूब कहा है कि किताब मुक़द्दस की सबसे उम्दा तफ़सीर खुद किताब मुक़द्दस है और इस आयत ज़ेर-ए-बहस पर यह बात ख़ूब सादिक़ आती है अगर हम नाज़रीन को किताब मुक़द्दस के वो मुक़ामात बता दें जहां दुनिया के सरदार का ज़िक्र आया है उन को को फ़ौरन मालूम हो जाएगा कि यह ख़िताब पैग़ंबर अरब मुहम्मद साहिब के लिए इस्तिमाल नहीं हुआ बल्कि शैतान के लिए इस्तिमाल हुआ है । चुनांचे युहन्ना के बारहवें बाब की 31 आयत में लिखा है :-

"अब दुनिया का सरदार निकाल दिया जाएगा"

और फिर युहन्ना के 16 बाब के 11 आयत में है "दुनिया का सरदार मुजरिम ठहराया गया है" और दूसरे कुरंथियों के 4 बाब की 4 आयत में मर्कूम है "इन बेईमानों के वास्ते जिनकी अक़लों को इस जहान के सरदार ने अंधा कर दिया है ताकि मसीह जो खुदा की सूरत है इस के जलाल की खुशख़बरी की रोशनी उन पर ना पड़े" और फिर इफ़सियों के दूसरे बाब की पहली दूसरी आयतों में यूं आया है "उसने तुम्हें भी ज़िंदा किया। जब अपने कुसूरों और गुनाहों के सबब से मुर्दा थे जिनमें तुम पेशतर दुनिया की रवीश पर चलते थे और हवा की अमलदारी के हाकिम यानी इस रूह की पैरवी करते थे जो अब ना-फ़रमानी के फ़रज़न्दों में तासीर करती है" अब इन मुक़ामात पर कुछ कहने की ज़रूरत नहीं और बिला कसी शक व शुबहा के इनसे साफ़ ज़ाहिर है कि जहान के सरदार से शैतान के सिवा और कोई मुराद नहीं है। यूं इस आयत मज़क़ूरा को हज़रत मुहम्मद साहिब की बशारत की सनद में पेश करके मुसलमान निहायत ही सख़्त ग़लती में पड़े और बड़ी सफ़ाई के साथ यह साबित किया है कि किताब मुक़द्दस की किसी एक इबारत को इस के सिलसिला से अलग लेकर इस से

मुताबिकत रखने वाली आयतों से क़त-ए-नज़र करके किसी किस्म की तावील करना फ़हीम लोगों में मुज़हका उड़ाना है।

## सय्यदना ईसा मसीह आख़िरी पैगम्बर हैं

हक़ीक़त यह है कि जो शख्स किताब मुक़द्दस का मुताअला गौर से करेगा इस पर निहायत सफ़ाई से वाज़ेह हो जाएगा कि मसीह के बाद कोई नबी नहीं आएगा। उसने खुद फ़रमाया है :-

"आसमान और ज़मीन टल जाएंगे लेकिन मेरी बातें ना टलेंगी।" (मरकुस बाब 13:31)

उसने अपने शागिर्दों से कहा :-

"और बादशाही की इस खुशख़बरी की मुनादी तमाम दुनिया में होगी ताकि सब क़ौमों के लिए गवाही हो और तब खातमा होगा (मत्ती बाब 24:14 आयत)

इस लिए जब तक इंजील यानी मसीही मज़हब की मुनादी वाक़ई तमाम दुनिया में ना हौले उस वक़्त तक खुदा की तरफ़ से कोई और तरीक़ मसीहीयत को मंसूख़ करने के लिए नहीं आएगा। अलावा-बरें जिब्राईल फ़रिश्ता ने जब कुँवारी मर्यम को सय्यदना ईसा मसीह की पैदाइश की ख़बर दी तो खुदा का यह पैग़ाम पहुंचाया :-

"उस की (यानी मसीह की ) बादशाही का आख़िर ना होगा" (लूका बाब 1 आयत 33)

मुसलमानों को चाहिए कि इन बातों पर गौर करें और उन को पता लग जाएगा कि सय्यदना ईसा मसीह आख़िरी नबी हैं।

और यह कि उनके सिवा "आदमीयों को कोई दूसरा नाम नहीं बख़शा गया जिसके वसीले से हम नजात पा सकें "(आमाल बाब 4 आयत 12)